# कीटनाशकों से बचाव

पेड़-पौधे भी मनुष्यों की तरह रोगग्रस्त हो जाते हैं। पौधों के रोगी होने से उनका उपचार समय-समय पर किया जाना चाहिए अन्यथा पौधे रोगग्रस्त होकर तुरन्त नष्ट हो जाते हैं। प्रमुख कीट-पतंगों एवं उससे उत्पन्न होने वाली विभिन्न बीमारी के विषय में जानकारी होना आवश्यक है। ये बिमारियाँ निम्नलिखित हैं —

1. लीफमाइन
2. माहूँ
3. दीमक
4. पौधा गलना
5. पतदोंग

## 1. लीफमाइन :-

यदि पौधे की पत्तियों की ऊपरी सतह सफेद पतली धारी दिखाई दे, पत्तों पर छेद दिखाई दे तो यह इस बात का संकेत करता है, कि उस पर लीफमाइन का प्रकोप है। इसका उपचार डाईमोकाल को 1 लीटर पानी में 3ml घोल डालकर 2-3 बार छिड़काव करना है।

Scanned with CamScanner

2. **माहूँ :-** यदि पौधों की पत्तियाँ मुड़ गई हो या साधारण पत्तियों के आकार से छोटी हो या पत्तियों के आकार के ऊपरी व निचली सतह पर कीट झुंड में दिखाई दे तो इसका तात्पर्य यह है कि पौधे में माहूँ रोग का प्रभाव है। 1 लीटर पानी में 2.5 ml दवा मिलाकर पौधों में छिड़काव करनी चाहिए।

3. **दीमक :-** यदि पौधों पर दीमक का प्रकोप हो तो 2% हैवक्लोर के घोल से पौधों की सिंचाई करनी चाहिए।

4. **पौधा गलना :-** यदि छोटे पौधे जमीन की सतह पर गल कर गिरे हुए दिखाई पड़े तो यह इस बात का संकेत करता है कि पौधे आर्द्र गलन रोग से प्रभावित है। ऐसी स्थिति में पौधों पर कैप्टान या कैलकामिन का छिड़काव 1 लीटर पानी में 1 ग्राम कैलकामिन डालकर करना चाहिए।

5. **पत्तदाँग :-** यदि पौधों पर काले या भूरे रंग के धब्बे दिखाई पड़े तो यह रोग की ओर संकेत करता है। ऐसे रोग होने पर डाइथेन M 45 या वेगसिरंग के 0.2 घोल का छिड़काव किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

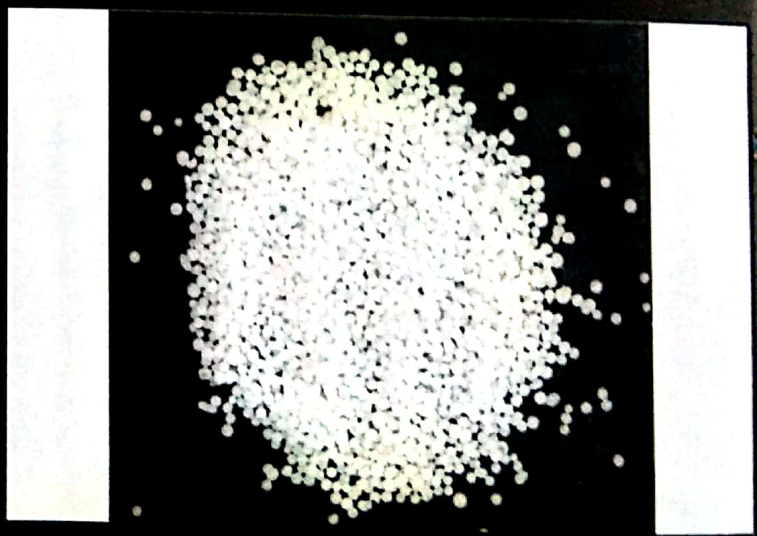

Scanned with CamScanner